• संत-सज्जनों की जन्मभूमि है-**शान्तिकुञ्ज**
• वर्षाजल की बूँदें **गिरें जहाँ, थामो उन्हें वहाँ** 3

4 ईको-फ्रैण्डली होली, एक प्रशंसनीय पहल

7 कोरोना का फैलने से बचाएँ, टीका अवश्य लगवायें

7 करोड़ों गायत्री मंत्र लेखन की साधना में भागीदारी का सुयोग

शान्तिकुञ्ज में सादगी से और सुरक्षापूर्वक मनाई गई होली 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news.shantikunj@gmail.com

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 अप्रैल 2021

वर्ष : 33, **अंक :** 20
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 अप्रैल 2021
वार्षिक चंदा : .....₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) :.....₹ 800/-
प्रति अंक : .....₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

ज्ञानयज्ञ

इस युग का महानतम अभियान युग की हर समस्या का समाधान

युगऋषि वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

विचार बदलें तो दुनिया बदले

मनुष्य की मूल शक्ति विचारणा है। विचारों की उत्कृष्टता और निकृष्टता ही उसे ऊँचा उठाती एवं नीचे गिराती है। समस्याएँ विचारों की विकृति से उत्पन्न होती हैं और उनका समाधान दृष्टिकोण बदलने से निकलता है। हम रोज ही देखते हैं कि एक प्रकार के विचार एक को देवता बनाते हैं और दूसरे प्रकार के विचार दूसरे को दानव की पंक्ति में लाकर खड़ा कर देते हैं। सचमुच जो जैसा सोचता है, वह वैसा ही बनकर रहता है। इस तथ्य को समझ लेने पर ही आज की मानवीय समस्याओं का कारण और निवारण ठीक तरह समझा जा सकता है।

खेद है कि हमारे मूर्धन्य व्यक्ति इतनाभर सोचते रहे हैं कि शासनतन्त्र के माध्यम से सुविधा-साधन बढ़ा देने से मनुष्य सुखी रहने लगेगा और अपनी उलझनें सुलझा लेगा। पर देखते हैं कि वह मान्यताएँ गलत सिद्ध होती चली जा रही हैं। शासन तन्त्र को सुधारने के लिये जितने हाथ-पैर पीटे जाते हैं, उतनी ही उससे विकृतियाँ उत्पन्न होती चली जा रही हैं। अर्थ-तन्त्र से निःसन्देह कई प्रकार की सुविधाएँ उत्पन्न हुई हैं, पर परिणाम उलटा ही हो रहा है। बढ़े हुए धन का दुरुपयोग बढ़ रहा है और उससे अपराधों की, रोगों की एवं विद्वेषभरी घटनाएँ तीव्र होती जा रही हैं। विलासिता की बढ़ती हुई आकांक्षा के सामने बढ़ी हुई आजीविका निरन्तर छोटी पड़ती चली जा रही है और व्यक्ति अपने आपको अधिक दरिद्र, अधिक अभावग्रस्त, अधिक दुःखी अनुभव कर रहा है।

आज विज्ञान, शिक्षा, चिकित्सा, शिल्प, कला, परिवहन, यातायात, उद्योग, मनोरंजन, अस्त्र-शस्त्र सभी साधन बढ़ रहे हैं, पर इसके फलस्वरूप व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक स्वस्थता में रत्ती भर भी योगदान नहीं मिला है, वरन् विकृति ही बढ़ी है। इसी प्रकार कानून का ढाँचा बढ़ाने-सुरक्षा व्यवस्था बनाने आदि के लिए जो प्रयत्न किये जा रहे हैं, वे भी समाजगत सद्भावना, संगठन, सुव्यवस्था, समर्थता एवं प्रगति में सहायक सिद्ध नहीं हो रहे हैं। तथाकथित प्रगति की जड़ें बिलकुल खोखली हैं, किसी भी धक्के से वह लड़खड़ा सकती हैं।

स्थायी प्रगति और सुदृढ़ समर्थता के लिए चरित्र बल होना चाहिए और वह उत्कृष्ट विचारणा की भूमि पर ही उग सकता है।

आज सर्वत्र अशान्ति, आशंका और असन्तोष का जो वातावरण देखते हैं, उनके पीछे एक ही कारण है-मानवीय दुर्बुद्धि का बढ़ जाना और उसका दुष्प्रवृत्तियों की ओर मुड़ जाना। यदि यह प्रवाह रोका जा सके, लोगों को उच्च आदर्शवादिता की रीति-नीति समझाने के लिए तैयार किया जा सके, तो परिस्थितियाँ बिल्कुल उलट सकती हैं। जो क्षमता आज विघटनात्मक-अनीतिमूलक क्रिया-कलापों में लगी है, वह यदि उलटकर सृजनात्मक और सद्भाव संवर्द्धन में लग जाये तो देखते-देखते जादू की तरह सारी परिस्थितियों का काया-कल्प हो सकता है। वर्तमान नारकीय वातावरण देखते-देखते स्वर्गीय सुषमा में बदल सकता है।

एक क्रान्तिकारी पहल

तथ्यों का तकाजा था कि मानव समाज के सम्मुख उपस्थित सर्वतोमुखी, सर्वभक्षी संकट को देखा, समझा जाय और विनाश की दिशा में तेजी से बढ़ते हुए कदमों को रोकने के लिए कुछ ठोस प्रयास किया जाय। समय की पुकार और युग की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए युग निर्माण योजना अपने ढंग की अनोखी नीति, कार्य पद्धति लेकर सामने आई और प्रसन्नता की बात है कि उसका हर क्षेत्र में स्वागत हुआ है।

धन-सम्पदा और साधन-सुविधाएँ बढ़ाकर मानवीय सुख-शान्ति बढ़ाने के प्रयत्नों में दूसरे लगे हुए हैं वह सराहनीय है, पर हमें सोचना यह है कि दुर्बुद्धि का वर्तमान क्रम यदि इसी तरह चलता रहा तो कुबेर की तरह सम्पत्ति और इन्द्र की तरह साधन बढ़ जाने पर भी दुर्बुद्धि के रहते विपत्तियाँ ही बढ़ेगी। सद्बुद्धि ही अभावग्रस्त जीवन को भी सुख-शान्ति से भरपूर रख सकती है। इसलिए जिस महत्त्वपूर्ण तथ्य की ओर दूसरों का ध्यान नहीं है, उसे अपने हाथ में लेना चाहिए और दुर्बुद्धि के उन्मूलन एवं सद्बुद्धि की संस्थापना में प्राणपण से जुट जाना चाहिए। यह प्रयास आँखों से दिखाई न पड़ने के कारण सस्ती वाह-वाही भले ही न दिला सकें, पर अपनी उपयोगिता के कारण उसका महत्त्व इतना बड़ा है कि उसके ऊपर पुण्य-परमार्थ कहे जाने वाले समस्त कार्यों को निछावर किया जा सकता है।

उद्देश्य और कार्ययोजना

युग-निर्माण योजना का 'ज्ञानयज्ञ अभियान' इतिहास में उपलब्ध अब तक के सबसे महान, सृजनात्मक कार्यों में से एक है। इसकी कार्य-पद्धति यह है कि घर-घर, जन-जन से संपर्क स्थापित कर व्यक्ति और समाज के सामने प्रस्तुत अगणित समस्याओं का स्वस्थ और सही समाधान समझाया जाय। हज़ार वर्षों की गुलामी के बाद भारतीय जनता की विचार-पद्धति में बड़ी विकृति आई है और उसमें से अधिकांश मान्यताएँ निरर्थक ही नहीं, अनर्थ मूलक भी बन गई हैं, पर लोग उन्हें परम्परा मान कर छाती से चिपकाये बैठे हैं और तरह-तरह के कष्ट सहते हैं। ज्ञानयज्ञ का प्रयोजन व्यक्ति की विवेकशीलता को जाग्रत् करना है, जो लोगों को उचित-अनुचित का भेद समझा सके और जो अवांछनीय है उसे हटाने तथा औचित्य को स्वीकार करने का साहस जगा सके।

औचित्य, न्याय और विवेक से सम्पादित एक प्रगतिशील विचारधारा का सृजन युग निर्माण योजना द्वारा किया गया है। प्रसन्नता की बात है कि ऐसे परमार्थ प्रेमियों की संख्या दिन-दिन बढ़ती जा रही है और वे अपने समय तथा साधनों का एक अंश नियमित रूप से लगाने लगे हैं, जिससे कि घर-घर जाकर जन-जन से सम्पर्क स्थापित किया जा सके और उनकी मनोभूमि तथा आवश्यकता को देखते हुए उन्हें नवनिर्माण का सृजनात्मक साहित्य पढ़ने के लिए दिया जा सके जो छोटे-छोटे ट्रैक्टों, विज्ञप्तियों एवं अखण्ड-ज्योति, युग-निर्माण पत्रिकाओं के रूप में उपलब्ध हैं।

एक घण्टा समय और बीस पैसा नित्य (आलेख लिखे जाने के समय आधा कप चाय की कीमत) ज्ञानयज्ञ के लिए नियमित रूप से देने का व्रत लेने वाले भावनाशील लोगों को युग-निर्माण योजना का सदस्य माना जाता है और उन्हीं का संगठन इस अभियान के अतिरिक्त शतसूत्री रचनात्मक एवं संघर्षात्मक कार्यक्रमों को हाथ में लेकर भावनात्मक नव-निर्माण के पुण्य-प्रयोजन को भी आगे बढ़ाता है।

ज्ञानयज्ञ देखने-सुनने में छोटी बात लगती है, पर उसकी सम्भावनाएँ इतनी विशाल हैं कि यदि ठीक तरह इस अभियान को चलाया जा सका तो विश्वास है कि लोकमानस में विवेकशीलता और सत्प्रवृत्तियों की गहरी स्थापना सम्भव हो सकेगी और नये युग के अवतरण का स्वप्न साकार किया जा सकेगा।

ज्ञानयज्ञ योजना

- प्रतिदिन 5 रुपये (वर्तमान समय में आधा कप चाय की कीमत) ज्ञानयज्ञ के लिए निकालना।
- इस अंशदान से व्यक्तिगत रूप से या शाखा/शक्तिपीठों के स्तर पर संगठित होकर युग साहित्य खरीदा जाना।
- युगऋषि के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए नित्य एक घण्टा अथवा सप्ताह में एक दिन का समयदान।
- झोला पुस्तकालय, ज्ञानरथ, पुस्तक मेले जैसे माध्यमों से घर-घर, जन-जन तक युगऋषि द्वारा लिखित साहित्य पहुँचाना।
- अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, प्रज्ञा अभियान के नियमित ग्राहक-पाठक बनाना।
- आत्मीयतापूर्वक लोगों की कष्ट-परेशानियों, समस्याओं को सुनना और पूज्य गुरुदेव के विचारों के अनुरूप उनके समाधान बताना। उन्हें गायत्री उपासना, साधना के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित करना तथा कुरीतियों व दुष्प्रवृत्तियों को त्यागने, सृजनात्मक गतिविधियों में शामिल होने के लिए सहमत करना। ध्यान रहे नियमित गायत्री उपासना और यज्ञ हर समस्या के समाधान में सहायक सिद्ध होते हैं।

युगऋषि का आह्वान

समय की पुकार है कि इन प्रयासों में और अधिक तीव्रता लाई जाय। युग की माँग है कि जिन्हें मनुष्यता से प्यार हो वे नव-निर्माण के प्रयत्नों को ईश्वर की पूजा से अधिक महत्त्वपूर्ण मानें। धर्म, दर्शन और अध्यात्म की चुनौती है कि जिनमें इस उत्कृष्टता की प्रकाश-किरणें सचमुच विद्यमान हों, वे युग परिवर्तन के लिए, धरती पर देवत्व का अवतरण सम्भव करने के लिए अन्यमनस्क होकर चिह्न पूजा करते हुए नहीं, भागीरथी प्रयत्नों में जुटे हुए दिखाई पड़ें। साहस, कर्तव्य और पुरुषार्थ की कसौटी आज इस रूप में सामने आई है कि हम बढ़-चढ़कर ऐसे त्याग, बलिदान का परिचय दें, जिससे मानवीय आदर्शों का पुनरुत्थान सम्भव हो सके।

वाङ्मय खण्ड 66, पृष्ठ 4.44-46
से संकलित, सम्पादित

सम्पादकीय

संत-सज्जनों की जन्मभूमि है गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज

शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती

परम पूज्य गुरुदेव का कथन है, ''मनुष्य जन्म सहज है, लेकिन मनुष्यता कठिनाई से मिलती है।'' चाहता तो हर व्यक्ति यही है कि वह एक अच्छा इंसान बने, अच्छी प्रतिष्ठा अर्जित करे, लेकिन अधिकांश लोग युग के प्रवाह में बहते और ढर्रे का जीवन जीते ही दिखाई देते हैं।

सच यह भी है कि मनुष्यता को पाने के लिए सद्गुरु की आवश्यकता होती है। सद्गुरु वह है जो व्यक्ति को उसकी सृजनात्मक सामर्थ्य का सही बोध करा सके और उसे जीने की सही राह दिखाकर मानवोचित गौरव-गरिमा दिला सके। शान्तिकुञ्ज सद्गुरुदेव युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के तप से अनुप्राणित वह सिद्ध भूमि है जिसने विश्व के करोड़ों लोगों के जीवन को सही दिशा दी, उन्हें मानवता की राह पर चलना सिखाया, आगे बढ़ाया। शान्तिकुञ्ज संतों और सज्जनों की जन्मभूमि है।

आज विश्व में लगभग पौने आठ सौ करोड़ मनुष्य हैं, लेकिन मानवता कितने लोगों में है, कहा नहीं जा सकता। यदि सभी में मानवता होती तो फिर इस दुनिया में अशान्ति, आक्रोश, भय, निराशा, हताशा, अभाव, अतृप्ति जैसी परिस्थितियाँ क्यों दिखाई देतीं? परमात्मा ने जिस मनुष्य को इतनी सामर्थ्य प्रदान की है कि वह धरती को स्वर्ग-सी सुन्दर बना सकता है, वह अपने ही भरण-पोषण के लिए इतना परेशान क्यों होता? सच तो यही है कि आज अधिकांश लोग अपनी सामर्थ्य से अनभिज्ञ हैं और नर-पशु, नर-कीटकों जैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं। बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपनी बल, बुद्धि का खूब विकास किया है, लेकिन मानव की मूल प्रवृत्ति 'जियो और जीने दो' को त्यागकर उसका दुरुपयोग कर रहे हैं। जो अपनी सुख-सुविधाओं के लिए दूसरों के हितों का ध्यान नहीं रखते और उनके जीवन में संकट खड़े करते हैं वे मानव नहीं दानव ही कहे जा सकते हैं।

मानवता का अर्थ है उद्देश्यपूर्ण सर्वहितकारी आनन्दित जीवन। जो ऐसा जीवन जीते हैं वे संत और सज्जन होते हैं। उनकी खुशियाँ संसाधनों पर आधारित नहीं होतीं, वे हर परिस्थिति में सहजता से ढलते और ऊँचे उद्देश्यों के लिए कष्ट-कठिनाइयाँ सहते हुए भी आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। समाज, देश और इतिहास ऐसे ही लोगों को याद रखता है। राम प्रसाद बिस्मिल और भगतसिंह फाँसी के फंदे पर जाते समय भी आनन्द और मस्ती से भरे हुए थे। महाराणा प्रताप को घास की रोटियाँ और बरछी, तलवार, भालों के घाव कष्ट से ज्यादा आनन्द की अनुभूति ही कराते रहे होंगे। भक्त रैदास और तुलसीदास के पास धन-वैभव नहीं, वह मानवता ही थी जिसने उन्हें अमर कर दिया। इतिहास ऐसे ही लोगों का ऋणी है, जिन्होंने मानवता का सच्चा धर्म निभाया। वे स्वयं शान से जिए तथा औरों को भी जीना सिखाया।

शान्तिकुञ्ज वह देवभूमि है, जाग्रत् चैतन्यतीर्थ है जिसने करोड़ों लोगों के जीवन में देवत्व का संचार किया है। इस देव परिवार से जुड़े लाखों लोग ऐसे मिल जायेंगे जिनके जीवन में कभी नशा, मांसाहार, गुंडागर्दी तथा जीवन के अनेक दोष-दुर्गुण अपने चरम पर थे। ऐसे अनगिनत लोगों का इतिहास है जिनकी बुरी आदतों को बदलना लोग असंभव कार्य कहा करते थे। लेकिन युगशक्ति की दिव्य धाराओं ने किसी न किसी रूप में उनके जीवन में प्रवेश किया। किसी को अखण्ड ज्योति पत्रिका के क्रान्तिकारी विचारों का आकर्षण शान्तिकुञ्ज लाया। किसी के परिवारी जनों ने गायत्री उपासना प्रारंभ कर दी, जिससे उस घर के लोगों की मनःस्थिति में परिवर्तन आने लगा। वैसे तो पर्यटन और दर्शन की सामान्य मानसिकता के साथ आने वालों पर भी शान्तिकुञ्ज की सिद्धभूमि अपना सूक्ष्म प्रभाव छोड़ती ही है, लेकिन जो भी भक्तिभाव के साथ यहाँ आया है और उसने यहाँ रहकर न्यूनतम एक संजीवनी साधना सत्र किया है उसने अपने जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन अनुभव किया ही है।

आनन्दमय जीवन, अच्छी प्रतिष्ठा हर कोई चाहता है। लेकिन अधिकांश लोग युग के प्रवाह में बहते, परिस्थितियों को सहते, अवाञ्छनीयताओं को अपनाते हुए ढर्रे का जीवन जीते हुए ही दिखाई देते हैं। वे अंध विश्वासों से उबरने का, परम्पराओं को बदलने का साहस नहीं जुटा पाते। झूठी शान के दलदल में फँसे लोग आदर्शों को अपनाने की हिम्मत ही नहीं कर पाते। कुछ लोगों की अन्तरात्मा उन्हें झकझोरती है तो यह सोचकर मन मसोसकर रह जाते हैं कि अकेला चना क्या भाड़ फोड़ लेगा? ऐसे लोग पेट और प्रजनन तक सीमित रहते और पशुवत जीवन जीते ही दिखाई देते हैं।

शान्तिकुञ्ज प्रज्ञावतार परम पूज्य गुरुदेव की कर्मभूमि है। जिस प्रकार भगवान राम और भगवान कृष्ण ने कभी रीछ-वानरों और ग्वालबालों में नवचेतना का संचार कर उन्हें असुरता के विरुद्ध खड़ा किया था, वही इतिहास इस देवभूमि से दोहराया जा रहा है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने प्रभु श्रीराम की सामर्थ्य के प्रति श्रद्धावनत होकर वन्दना की है-

मूक होइ बाचाल पंगु चढइ गिरिबर गहन।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन।।

अर्थात्-जिनकी कृपा से गूँगा बहुत सुंदर बोलने वाला हो जाता है और लँगड़ा-लूला दुर्गम पहाड़ पर चढ़ जाता है, वे कलियुग के सब पापों को जला डालने वाले दयालु (भगवान) मुझ पर द्रवित हों (दया करें)।

ईश चेतना का यह स्वरूप शान्तिकुञ्ज में स्पष्ट दिखाई देता है। यह प्राण और ज्ञान दोनों की गंगोत्री है। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी ने अपने तप, प्रेम और दिव्य ज्ञान का अनुदान देकर लाखों-करोड़ों लोगों पर वही कृपा की है, जो प्रार्थना महात्मा तुलसीदास जी चाहते हैं। उसके प्रभाव से सामान्य से दिखाई देने वाले पीतवस्त्रधारी युगसृजेताओं के अदम्य उत्साह और विश्वास से बड़े-बड़े महानुभाव प्रभावित एवं प्रेरित होते देखे जाते हैं। साधक-श्रद्धालुओं के जीवन का कायाकल्प करने में समर्थ यह दिव्य चेतना सिद्धभूमि शान्तिकुञ्ज में अविरल प्रवाहित हैं।

सूक्ष्म अनुदानों के बाद यदि प्रत्यक्ष प्रभावों की बात की जाय तो शान्तिकुञ्ज ने लोगों को पवित्र और ऊँचे उद्देश्यों के लिए जीवन जीने की कला सिखाई है। ऐसा जीवन जिसमें दैवी अनुग्रह के साथ-साथ भरपूर आत्मसंतोष और लोक सम्मान प्राप्त होता है। गायत्री परिवार वह देव परिवार है जिससे जुड़े करोड़ों लोग देश, समाज और संस्कृति के उत्थान के लिए समर्पित हैं। इस अभियान से जुड़ने वालों को परमार्थपरायणता का जो आनन्द अनुभव होता है उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है।

अग्नि की ऊष्मा को शब्दों या चित्रों से अनुभव नहीं कराया जा सकता। उसे तो वही अनुभव कर सकता है जो कभी अग्नि के पास बैठा हो। उसी प्रकार जो समाज और संस्कृति के उत्थान के लिए समर्पित है, उसके जीवन के आनन्द को केवल वैसा करने वाले लोग ही अनुभव कर सकते हैं। यह एक ऐसा दैवीय प्रवाह है जिसके साथ जुड़ने वाले लोग 'यज्ञ पिता-गायत्री माता' की अनुकम्पा से नए जन्म और नए जीवन की अनुभूति करते हैं। उनके संकल्प प्रबल होते जाते हैं। बड़े उद्देश्यों से जुड़ जाने के कारण छोटी-छोटी कष्ट परेशानियाँ स्वतः ही तिरोहित होती जाती हैं। कभी राम के रीछ-वानरों, गाँधी के सत्याग्रहियों में बड़े उद्देश्यों के साथ जुड़कर जीवन सार्थक करने का जो जुनून रहा होगा, वह युग निर्माणियों में भी दिखाई देता है।

लोग पापनाशिनी माँ गंगा में स्नान कर अपने पाप-तापों को धोने जाते हैं। मात्र डुबकी लगाने से उन्हें कितना लाभ मिल पाता है यह तो वे ही जानते हैं, लेकिन श्रद्धापूर्वक शान्तिकुञ्ज के साथ जुड़ जाने वालों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आता ही है। शान्तिकुञ्ज आकर इस पवित्रतीर्थ की दिव्य ऊर्जा का लाभ लिया जाय तो अच्छा ही है अन्यथा आप जहाँ भी हैं, वहीं से इस देव परिवार से जुड़ने के कुछ सरल से अनुबन्ध-उपासना, साधना, आराधना, समयदान और अंशदान को अपनाते हुए अपने जीवन को पवित्रता एवं सार्थकता की दिशा दे सकते हैं।

जब अम्बर से बरसती हैं वर्षा की बूँदें

गिरें बूँदें जहाँ, थामो उन्हें वहाँ

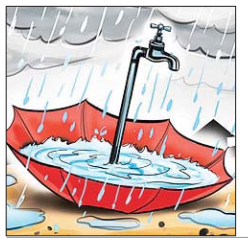

इस राष्ट्रीय अभियान में प्राणवान भागीदारी के लिए हमें अभी से कमर कस लेनी चाहिए

वर्तमान में कोरोनावायरस संकट ने पूरे विश्व की कमर तोड़ दी है। गरीब से गरीब और अमीर से अमीर के घर से लेकर बड़े-बड़े राष्ट्रों की अर्थ व्यवस्था ही चौपट नहीं की, अस्तित्व के लिए चुनौती भी खड़ी कर दी है। लेकिन क्या हम जानते हैं कि आने वाले दिनों में बढ़ता प्रदूषण, बिगड़ता पर्यावरण, निरन्तर बढ़ता तापमान और निरन्तर गिरता भूजल स्तर कितना बड़ा संकट खड़ा करने जा रहा है? विशेषज्ञों ने भारत के अनेक बड़े नगरों से पेयजल के आसन्न संकट की चेतावनी दी है, जो वर्तमान में सच साबित भी हो रही है। कोरोना से सँभलने का तो हमें अवसर नहीं मिला, लेकिन जल संकट से निपटने के लिए तो हमारे पास पूरा अवसर है। यदि हम आज चेत जायें तो मानवता पर बहुत बड़ा उपकार कर सकते हैं, वरना वह दिन दूर नहीं जब एक-दो दशकों बाद ही सारी दुनिया बूँद-बूँद जल के लिए तरसेगी।

भारत सरकार ने 'विश्व जल दिवस-22 मार्च 2021' से लेकर 30 नवम्बर 2021 तक **'कैच द रेन : व्हैन इट फॉल्स, व्हेअर इट फॉल्स'** नामक अभियान चला रखा है, जिसका शुभारम्भ विश्व जल दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री जी ने किया। सरकार की अपनी योजनाएँ हैं, लेकिन **बारिश के पानी को जहाँ भी संभव हो, जैसे भी संभव हो, उसे बचाने और जमीन में उतारने का कार्य देश के हर नागरिक को करना होगा।** मानवता को आसन्न जल संकट से बचाने के लिए **वर्षा का जल जहाँ भी गिरे, जब भी गिरे, उसे वहीं एकत्रित करने** के लिए हम सबको तत्पर होना होगा।

अखिल विश्व गायत्री परिवार अपने शत सूत्री अभियान के अन्तर्गत दशकों से जलस्रोतों की स्वच्छता, सफाई और जल संचय की विविध योजनाओं पर कार्य कर रहा है। जन्मशताब्दी वर्ष 2011 से भागीरथी जलाभिषेक अभियान के अन्तर्गत इस कार्य को बहुत गति मिली है, राष्ट्रीय स्तर पर शानदार सफलताएँ प्राप्त हुई हैं, जिन्होंने प्रशासन का भी ध्यान आकर्षित किया है। इस वर्ष शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के विशेष उत्साह के साथ जल संरक्षण के हमारे प्रयासों को योजनाबद्ध ढंग से और गति दी जानी चाहिए। हमें 'वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिताः' का उद्घोष करते हुए राष्ट्रीय अभियान में बढ़-चढ़कर योगदान देना है, जन-जन को प्रेरित एवं सक्रिय करना है।

तीन स्तर पर जल संरक्षण किया जाना है। (1) छतीय जल संरक्षण, (2) सतही जल संरक्षण और (3) भू-जल रीचार्ज। इनकी सुगम विधियाँ प्रज्ञा अभियान के आगामी अंकों में प्रकाशित की जाती रहेंगी। ग्राम प्रबन्धन विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य तथा जल संरक्षण विशेषज्ञ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री योगेन्द्र गिरि (मोबाइल : 942 504 7982), जिन्होंने इस क्षेत्र में असाधारण कार्य किये हैं, से सीधे संपर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

जल संरक्षण सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ

- देश में 255 जिले एवं 1593 विकासखण्ड ऐसे हैं जो आज पानी की कमी से जूझ रहे हैं।
- भारत सरकार के आँकड़ों के अनुसार हर व्यक्ति को प्रतिवर्ष 1700 घन मीटर से कम पानी मिले तो तनाव की स्थिति होती है और प्रतिवर्ष 1000 घन मीटर से कम हो तो वह अभाव की स्थिति होती है।

वर्ष 1951 में हमारे देश में प्रति व्यक्ति 5178 घन मीटर पानी उपलब्ध था। बढ़ती आबादी और घटते जलस्तर के कारण सन् 2011 में देश में तनाव की स्थिति में आ गई और प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता केवल 1651 घन मीटर रह गई। यह स्थिति वर्तमान की तरह ही बनी रही तो सन् 2051 में यह मात्रा 1228 ही रह जाने का अनुमान है। ऐसी स्थिति में हर व्यक्ति को पानी की किल्लत का सामना करना पड़ेगा।

रक्तदान का महा अभियान

गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ (दिया) बाराँ एवं हाडोती ब्लड डोनर सोसाइटी की शानदार पहल

5 वर्ष में 104 शिविर 11000 यूनिट रक्तदान

बाराँ। राजस्थान

''मैं अकेला ही चला था गालिब, लोग जुड़ते गये, कारवाँ बढ़ता गया।'' यह शेर रक्तदान अभियान के अन्तर्गत गायत्री परिवार के युवा प्रकोष्ठ दिया एवं हाडोती ब्लड डोनर सोसाइटी को मिली सफलता के परिप्रेक्ष्य में बिलकुल सटीक बैठता है।

बाराँ में युवा प्रकोष्ठ रक्तदान के कार्यक्रम बहुत पहले से ही कर रहा है, लेकिन 5 वर्ष पूर्व 15 जून 2016 को दोनों संगठनों के सहयोग से गायत्री शक्तिपीठ सीताबाड़ी केलवाड़ा पर पहला रक्तदान शिविर आयोजित किया था, जिसमें 165 यूनिट रक्तदान हुआ था। गुरुपूर्णिमा पर गायत्री शक्तिपीठ अंता में लगाया गया शिविर भी बहुत सफल रहा। इसके बाद युवाओं में ऐसा जुनून पैदा हुआ कि यज्ञ हो या पर्व-त्यौहार, जन्मदिन हो या पुण्यतिथि हर जगह यह पुण्यकार्य जुड़ता गया। इस अभियान के अन्तर्गत विगत 5 वर्षों में 104 रक्तदान शिविर लगाये गए हैं, जिनमें 11000 यूनिट से ज्यादा रक्तदान हुआ है। तब से हर वर्ष 20-25 रक्तदान शिविर आयोजित करवा रहे हैं। यही वजह है कि ब्लड बैंक में जरूरतमंदों को मिलने वाले रक्त की पूर्ति काफी हद तक पूरी होने लगी है।

युवा प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. मुकेश मीणा बताते हैं कि रक्तदान को लेकर इस क्षेत्र के कुछ युवा मित्रों ने मिलकर व्हाट्सएप ग्रुप बनाया। क्रमशः लोग इससे जुड़ते गए। आज इससे 1000 से भी अधिक सदस्य जुड़े हैं।

गायत्री परिवार के युवा संगठन 'दिया' एवं हाडोती ब्लड डोनर सोसाइटी ने सर्वाधिक रक्तदान बाराँ के आदिवासी क्षेत्र किशनगंज, शाहबाद व कोटा के रामगजमंडी क्षेत्र से करवाया है।

शिविर लगाने के लिए पहले उस गाँव के प्रमुख लोगों की बैठक होती है, रक्तदान की प्रेरणादायी फिल्में दिखाई जाती हैं। उत्साहवर्धक शोभायात्रा निकाली जाती है। घर-घर सम्पर्क कर गाँववासियों को रक्तदान संकल्प पत्र भरवाने का लक्ष्य दिया जाता है।

बाराँ जिले के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में बसे सहरिया, खैरवा, मदारी, मुस्लिम रक्तदाताओं को भी इस रक्तदान अभियान से जोड़ा गया है आज आदिवासी लोगों में भी सैकड़ों लोग रक्तदान करने लगे हैं तथा कई युवा रक्त प्रेरक की भूमिका निभा रहे है।

सोसाइटी देश की 50 से अधिक ब्लड डोनेशन सोसायटी से जुड़ी हुई है। कोटा संभाग के साथ राजस्थान एवं अन्य प्रदेशों में रक्त की जरूरत पड़ने पर वहां के व्हाट्सएप ग्रुप से कनेक्टिविटी बनाकर भी ब्लड उपलब्ध करवाते हैं। अति दुर्लभ रक्तदान के लिए भी सूची निर्धारित की गई है। उन सदस्यों को एक-दो घंटे में ही ब्लड बैंक पहुँचकर रक्तदान करवाया जाता है। सोसायटी द्वारा ऑन कॉल भी सैकड़ों यूनिट रक्तदान करवाया जा चुका है।

सीताबाड़ी में चल रहा रक्तदान शिविर

सोशल मीडिया का सदुपयोग व्हॉट्सएप से जुड़े हैं 1000 से अधिक रक्तदाता

रक्तदान का प्रचार-प्रसार करने के लिए 10 व्हाट्सएप ग्रुप के अलावा एक फेसबुक अकाउंट, दो फेसबुक पेज तथा एक यूट्यूब चैनल भी सोसायटी द्वारा संचालित किया जा रहा है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, जैन हर कोई मिलजुल कर काम कर रहे हैं। इस सोसाइटी में गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ के साथ विजय गुप्ता रामगजमंडी, जावेद खान, डॉ. मुकेश मीणा, हरीशचंद्र देवांगन, मुकेश नामा, पवन महोबिया, नरेंद्र शर्मा, देवेंद्र सिंघल, महबूब खान, इंद्रजीत सिंह सोलंकी आदि बहुत सारे लोग इस सेवा अभियान को गति देने में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। भीलवाड़ा क्षेत्र में रक्तदान शिविरों के आयोजन में राजेन्द्र महेश्वरी एवं राकेश वैष्णव की प्रमुख भूमिका रही है।

रक्तदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पिछले तीन वर्षो से गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ व सोसायटी को राज्य सरकार द्वारा प्रदेश स्तर पर सयुंक्त रूप सम्मानित किया जा चुका है।

प्रमुख विशेषताएँ

- गायत्री परिवार और हाड़ौती ब्लड डोनर सोसाइटी परस्पर पूरक संस्थाएँ हैं। अधिकांश युवा दोनों ही संस्थाओं के सदस्य हैं।
- बाराँ, रामगंजमंडी और भीलवाड़ा क्षेत्रों में होते हैं अधिकांश शिविर।
- आदिवासी क्षेत्रों में रक्तदान का विशेष उत्साह है।
- प्रत्येक रक्तदाता को युगसाहित्य भेंट किया जाता है, नशामुक्ति के लिए प्रेरित किया जाता है और वृक्षारोपण जैसे अभियानों से जोड़ा जाता है।

एक नेक पहल से प्रशासन को उसकी ज़िम्मेदारियों की याद दिलाई

प्रशासन ने सफाई अभियान में लगाई अपनी टीम

जावरा, रतलाम। मध्य प्रदेश

नगर के मध्य बहने वाले पिलियाखाल का जल कभी नगरवासियों के उपयोग में आता था। लेकिन वर्षों से हो रही उसकी सफाई की उपेक्षा के कारण वहाँ गंदगी का अम्बार है जो लोगों की परेशानी का कारण बना हुआ है।

गायत्री परिवार के दो नवयुवक श्री लखन पंवार और विजय दगदी ने अपने जल संरक्षण अभियान के अन्तर्गत अकेले ही इस गंदगी को साफ करने की पहल की। वे शंकर मंदिर के आसपास के क्षेत्र की सफाई में जुट गए।

> पिलियाखाल को प्रदूषणमुक्त करने और इस क्षेत्र के सौन्दर्यीकरण की बाद मध्य प्रदेश की विधानसभा में भी उठी है। राज्य प्रशासन द्वारा लगभग साढ़े चौदह करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता भी स्वीकृत की गई है। इसके बावजूद भी यह उपेक्षित ही पड़ा था। एक युगनिर्माणी की गिलहरी जैसी सक्रियता ने सबकी आँखें खोल दीं, एक प्रभावशाली अभियान का शुभारम्भ हुआ।

उन्होंने बताया कि यहाँ की गंदगी न केवल नगरवासियों की परेशानी का कारण है, बल्कि वर्षाकाल में यहाँ का दूषित जल अन्य नदियों में जाकर उन्हें भी प्रदूषित करता है।

प्रयास रंग लाये। नगरपालिका प्रशासन भी इस एकाकी पहल से जागा और पिलियाखाल की स्वच्छता के लिए अपनी टीम लगा दी। इन प्रयासों ने क्षेत्र के लोगों को भी जागरूक किया। उनमें भी इस क्षेत्र में गंदगी न डालने भावनाएँ जाग्रत् हो रही हैं।

कोरोना काल में की गई सेवाओं के लिए श्रीमती विनीता खण्डेलवाल का सम्मान

मनावर, खण्डवा। मध्य प्रदेश

परम पूज्य गुरुदेव युगप्रवर्तक है, प्रज्ञावतार हैं और एक अशं से वे न जाने कितने युगसृजेताओं के अंतःकरण में बस कर उन्हें स्पन्दित कर रहे हैं। स्वयं परम पूज्य गुरुदेव ने हमें एक अंश का प्रज्ञावतार बनने की प्रेरणा दी है और जो उनके लिए समर्पित रहे हैं, वे निरन्तर इस प्राण ऊर्जा को अनुभव भी करते हैं। ऐसी ही बहिन हैं मनावर श्रीमती विनीता खण्डेलवाल, जो दूसरों के दर्द को अनुभव करती हैं और उनकी पीड़ा को दूर करने के लिए अहर्निश तन, मन, धन से समर्पित-सक्रिय रहती हैं।

गायत्री मंत्रलेखन साधना अभियान, कारागारों में बंदियों के उत्थान तथा युगसृजेताओं के प्रोत्साहन के लिए समर्पित रहा है जीवन

पिछले एक वर्ष से कोरानावायरस का आतंक पूरी दुनिया ने झेला। समाज के कुछ वर्ग ऐसे भी हैं जिन्हें अपनी जान हथेली पर रखकर लोगों की सेवा करनी पड़ी है। श्रीमती विनीता खण्डेलवाल अब तक ऐसे 1000 से अधिक लोगों की भावभरी सेवाओं का अभिनन्दन कर चुकी हैं। यह सम्मान ही तो है जो सेवक को नई ताज़गी प्रदान करता है। समाजसेवा का सम्मान होना ही चाहिए। पुलिस, चिकित्सा, स्वच्छता एवं अन्य अनेक प्रकार की आवश्यक सेवाओं से जुड़े लोगों का आभार व्यक्त करने के साथ सम्मान के तौर पर उन्हें युगसाहित्य, गायत्री मंत्र लेखन, पुस्तिकाएँ, गायत्री मंत्र का उपवस्त्र, मोमेण्टो, शील्ड आदि प्रदान किये गए।

श्रीमती विनीता खण्डेलवाल लोगों के जीवन को मानवोचित दिशा में अग्रसर करने के लिए सद्बुद्धि की उपासना करने के लिए प्रेरित करती हैं। वे लाखों गायत्री महामंत्र लेखन पुस्तिकाएँ अपनी ओर से गाँव-गाँव, गली-गली वितरित करा चुकी हैं।

बंदीगृहों में निरुद्ध भूले-भटके लोगों को सही राह दिखाने के उन्होंने प्रबल प्रयास किए हैं। मध्य प्रदेश के अनेक जिलों के केन्द्रीय कारागारों में उनके द्वारा निरन्तर प्रज्ञा आयोजन किये जा रहे हैं। वे कारागारों में 108 कुण्डीय यज्ञ तक करा चुकी हैं।

ऐसी देवीस्वरूप दानवीर माता को परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी की ओर से भरपूर अनुदान भी मिल रहे हैं, जिन्हें वे उदारतापूर्वक मानवता के कल्याण के लिए समर्पित कर देती हैं।

श्रीमती विनीता खण्डेलवाल और गायत्री परिवार इन्दौर को भी लॉकडाउन के समय किए गए सेवा कार्यों के लिए विभिन्न संस्थाओं की ओर से सम्मानित किया गया। श्री अग्रवाल समाज, इन्दौर के महिला प्रकोष्ठ ने उन्हें सम्मानित किया और अपनी पत्रिका में 'सुगन्धा' में विशेष स्थान दिया। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर प्रेस क्लब इन्दौर में उन्होंने गायत्री परिवार इन्दौर की ओर से कोविड-19 संक्रमण काल में की गई सेवाओं के लिए सम्मान ग्रहण किया। दिल्ली के खण्डेलवाल समाज ने भी उन्हें सम्मानित किया।

44 वें शिविर में 210 यूनिट रक्तदान हुआ

जमशेदपुर। झारखण्ड

नवयुग दल युवा प्रकोष्ठ टाटानगर का 44 वाँ रक्तदान शिविर बारी मैदान क्लब हाउस साकची में संपन्न हुआ, जिसमें कुल 210 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। यह शिविर स्वर्गीय नरेश्वर प्रसाद जी की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र श्री रामकृष्ण सिन्हा एवं श्री विश्वनाथ प्रसाद के सौजन्य से आयोजित किया गया था। जमशेदपुर ब्लड बैंक के डॉक्टर एवं वॉलंटरी ब्लड डोनर्स एसोसिएशन के सदस्यों का इसकी सफलता में सराहनीय योगदान रहा।

शिविर में जनप्रतिनिधि श्री विनीत शाह, एच.एस.एम. प्रमुख श्री सतीश सिंह सहित अनेक गणमान्य-पदाधिकारी पधारे और रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया। गायत्री परिवार की ओर से श्रीमती जसवीर कौर जी, श्रीमती पूर्णिमा सिंह, श्रीमती रेखा शर्मा नवयुग दल के श्री धर्मेन्द्र सिंह आदि सभी सदस्यों ने उत्साहभरी सक्रियता दर्शायी।

रक्तदान सहित गायत्री परिवार के विविध रचनात्मक आन्दोलनों में संलग्न गायत्री परिवर टाटानगर के युवा युगसृजेता

समाज के उत्थान के लिए बढ़ाया सेवा और सहयोग का हाथ

अभिनव पहल होली में लकड़ी की जगह गोबर के और कण्डों का होने लगा है प्रयोग

परम्परागत होली वैदिक नवसस्येष्टि यज्ञ का स्वरूप दिया

लखीमपुर के अतिरिक्त ईसानगर ब्लॉक के नारीबेहड़ तथा रमियाबेहड़ ब्लॉक के होलागढ़ गाँवों में भी गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ द्वारा इसी प्रकार ईको-फ्रैण्डली होली मनाई गई।

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

इस वर्ष गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर ने होलिका दहन कार्यक्रम 'नवसस्येष्टि यज्ञ' की वैदिक परम्परा के रूप में मनाया। इसमें पर्यावरण का विशेष ध्यान रखते हुए लकड़ियों की अपेक्षा गोबर के कण्डों का प्रयोग किया गया।

लखीमपुर में मोहल्ला श्रीरामनगर कॉलोनी बरखेरवा में सायंकाल होलिका दहन का कार्यक्रम आयोजित हुआ था। पूरे यज्ञीय विधि-विधान के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पहले गायत्री महामंत्र के साथ हवन सामग्री से आहुतियाँ दी गईं। फिर लोगों ने नह्वान्न की आहुतियाँ प्रदान कीं।

वाय.डी. कॉलेज के प्राचार्य श्री डी.एन. मालपानी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने होलिका दहन की प्रेरणाओं पर प्रकाश डाला। श्री मालपानी जी ने गायत्री परिवार द्वारा आरम्भ की गई ईको-फ्रैण्डली होली की परम्परा का स्वागत करते हुए कहा कि इस युग में घटती वन्य सम्पदा को देखते हुए यह एक प्रशंसनीय पहल

है। इससे पेड़ों के कटने में कमी आएगी, वहीं गो संरक्षण अभियान को भी बल मिलेगा। गाँवों में स्वावलम्बन बढ़ेगा।

कार्यक्रम का संचालन युवा प्रकोष्ठ के श्री अजय वर्मा, कुलदीप वर्मा एवं सुरेन्द्र वर्मा की टोली ने किया। नगर के संभ्रान्त लोगों ने भी इस अनुकरणीय पहल का हृदय से स्वागत किया। उन्होंने मातृशक्ति का सम्मान करने, नशा-अश्लीलता, फूहड़पन से बचने जैसी होली की सत्प्रेरणाओं के अनुरूप होलिका पर्व मनाने का मन बनाया।

लकड़ी का विकल्प बन रहे हैं गोबर से बने लठ्ठ

गायत्री परिवार द्वारा 'वैदिक होलिका दहन' की परम्परा आरंभ किये जाने से गुजरात की गोशालाओं को भी बहुत आर्थिक बल मिला है। सूरत सहित गुजरात में ऐसी कई गोशालाएँ हैं जो मशीन के सहारे गाय के गोबर से बड़े-बड़े लठ्ठ तैयार कर रही हैं। यह लकड़ी का एक शानदार विकल्प सिद्ध हो रहा है। शवदाह, बॉयलर आदि में भी इनका उपयोग होता है। इससे हो रही आय गोशालाओं को बचाने में बहुत बड़ा सहयोग करती है।

गोबर की लकड़ियाँ तैयार कर रहे श्री सोमिया बारिया की गोशाला का खर्च बढ़ता जा रहा था। वह गोशाला के लिए आने वाले चारे का पैसा भी नहीं दे पा रहे थे, तब उनके चारा वितरक ने उन्हें पंजाब से एक मशीन लाकर दी, जिसके सहारे आसानी से गोबर से लकड़ियाँ बनाने का काम आरंभ हुआ। अब वे बड़े पैमाने पर यह लकड़ियाँ बनाते और बेचते हैं जिनके सहारे गोशाला को बन्द होने से बचाना संभव हो सका है। वैदिक होलिका दहन से ऐसी लकड़ियों की माँग बढ़ी है।

देसंविवि की सक्रियता बंदियों को बेहतर जीवन व उज्ज्वल भविष्य की राह दिखाई

हरिद्वार और रुड़की के कारागारों में आयोजित किए योग प्रशिक्षण शिविर

हरिद्वार। उत्तराखण्ड

दिनांक 21 फरवरी से 28 फरवरी तक उप कारागार रुड़की में तथा दिनांक 1 मार्च से 9 मार्च तक जिला कारागार हरिद्वार में शान्तिकुञ्ज द्वारा योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के आचार्यों ने इनका संचालन करते हुए बंदियों के मन-मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव डाला। उनमें बेहतर जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य की आस जगाई, राह दिखाई।

उपरोक्त शिविर महिला एवं पुरुष दोनों प्रकार के बंदियों के लाभार्थ आयोजित किए गए थे। उन्हें आसन, प्राणायाम, ध्यान, मुद्रा जैसे प्रयोगों से तन-मन को स्वस्थ, एकाग्र करने की विधाएँ बताई गईं। दूसरी ओर गायत्री साधना के प्रभाव, विधि, कर्मफल, प्रारब्ध, पुनर्जन्म आदि की जानकारी देते हुए उनकी सोच को सकारात्मक एवं उत्कृष्ट बनाने के प्रभावशाली प्रयास किए गए। बंदियों ने निष्कासन तप के अन्तर्गत अपनी गलती स्वीकार की, उन्हें न दोहराने और गायत्री उपासना से जीवन को निरन्तर उत्कृष्ट बनाते रहने का संकल्प भी लिया।

देसंविवि के आचार्यों को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते अधिकारी और दीपयज्ञ की मनोरम छटा

शिविर का समापन दीपयज्ञ के साथ अत्यंत उल्लासभरे वातावरण में हुआ। इस अवसर पर सभी कारागार के सभी अधिकारी उपस्थित थे। अधिकारियों ने अखण्ड ज्योति पत्रिका की सदस्यता भी ग्रहण की। यह कार्यक्रम डॉ. मनोरमा नीखरा, डॉ. राकेश वर्मा के नेतृत्व में देव संस्कृति के छात्र-छात्राओं नरेन्द्र प्रसाद निराला, मोहित पांडे, लवकुश तिवारी, श्वेता चौधरी, शिवानी सैनी और मेघा तिवारी की टोली ने सम्पन्न कराया।

मुज़फ़्फरपुर, बिहार में भी बन्दियों के जीवनोत्थान के प्रयास

गायत्री शक्तिपीठ अखाड़ाघाट, मुज़फ़्फरपुर द्वारा 19 मार्च को शहीद खुदीराम बोस केन्द्रीय कारागार में बंदियों के उत्थान के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। वहाँ निरुद्ध लगभग 200 बंदियों ने आत्मोत्कर्ष की विविध प्रेरणाएँ हृदयंगम कीं। श्री दुर्गाशरण शर्मा ने छोटे-छोटे प्रेरक कथानकों के माध्यम से बंदियों का हौसला बढ़ाया और युगऋषि के विचारों के संग नया जीवन जीने की प्रेरणाएँ दीं।

कार्यक्रम में बंदियों को सत्साहित्य दिया गया, मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ बाँटी गईं। आयोजकों ने बंदियों को विश्वास दिलाया कि मनोयोगपूर्वक किये गए उनके साधनात्मक प्रयास आत्मसंतोष एवं समाज में प्रतिष्ठा दिलाएँगे। अनेक बंदियों ने इस आशय के संकल्प लिए।

गायत्री मंत्रलेखन अभियान में जुटीं मुस्लिम बेटियाँ

बगोदर, गिरिडीह। झारखण्ड

गायत्री परिवार ने स्थानीय बालिका विद्यालय में मुस्लिम छात्राओं को गायत्री मंत्र लेखन के लिए प्रेरित किया। दर्जनों बालिकाओं ने इसकी वैज्ञानिकता एवं सर्वहितकारी प्रेरणाओं को समझते हुए उत्साहपूर्वक मंत्रलेखन किया। यह कार्यक्रम एक प्रतियोगिता की तरह सम्पन्न हुआ। सबसे अच्छा मंत्र लेखन करने वाली बालिकाओं निकहत परवीन (बी.ए.), श्रेणी में शाहिना प्रवीण (बी.ए.) तथा नाजमीन परवीन को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

अपनी मंत्रलेखन पुस्तिकाओं के साथ बेटियाँ

विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती मंजू दास एवं शिक्षिका संध्या कुमारी ने बच्चों को गायत्री मंत्रलेखन साधना के लिए प्रेरित किया। गायत्री परिवार की बगोदर शाखा के श्री अशोक चौरसिया ने पुरस्कार प्रदान किये। उन्होंने छात्राओं को नियमित गायत्री उपासना, साधना की प्रेरणा दी। जल संरक्षण की प्रेरणाएँ भी दी गईं। इस कार्यक्रम में शिक्षक रणधीर कुमार शिक्षक एवं गायत्री परिवार के मनीष राज व संजय कुमार विभूति की सराहनीय भूमिका रही।

गायत्री परिवार ने की अग्निकाण्ड पीड़ितों की सहयता

श्रावस्ती। उत्तर प्रदेश : गायत्री परिवार श्रावस्ती की आपदा प्रबंधन टीम सिरसिया थाना क्षेत्र के मनिहारपुरवा में हुए अग्निकाण्ड के पीड़ितों की सहायता के लिए पहुँची। परिजनों ने अग्निकाण्ड प्रभावित परिवारों को अत्यावश्यक जीवनोपयोगी राहत सामग्री प्रदान की और परिस्थितियों का सामना करने के लिए मनोबल बढ़ाया। उल्लेखनीय है कि इस अग्निकाण्ड में 19 घर जलकर हो गए थे।

दिया, मुम्बई का तुलसी वृन्दावन स्थापना अभियान

सुप्रसिद्ध के.ई.एम. अस्पताल में स्थापना

मेट्रन द्वारा स्थापना एवं नर्सिंग स्टाफ द्वारा सामूहिक प्रार्थना

परेल, मुम्बई। महाराष्ट्र

घर-घर तुलसी स्थापना युग निर्माण की शत सूत्रीय योजना का एक प्रमुख अभियान है। दिया, मुम्बई इसे पूरे जोश और उत्साह के साथ गति दे रहा है। इसी क्रम में 27 मार्च को सुप्रसिद्ध के.ई.एम. अस्पताल, परेल के स्कूल ऑफ नर्सिंग के छात्रावास में तुलसी वृंदावन की स्थापना की गई।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि मेट्रन सुश्री पी.वी. नाइक एवं प्राचार्या सुश्री भाग्यश्री शिधलकर थीं। सुश्री नाइक ने इसे नर्सिंग स्टाफ ही नहीं, सम्पूर्ण चिकित्सा बिरादरी के लिए अनुपम उपहार बताया। सुश्री भाग्यश्री ने कहा कि तुलसी अपने आध्यात्मिक एवं स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से अनमोल है।

प्रकृति के साथ जिओ

गायत्री परिवार के डॉ. विक्रम कात्रे और डॉ. अनिता गौले ने बताया कि हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं, इसलिए स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ रही हैं। तुलसी वृंदावन की स्थापना मनुष्य को प्रकृति के समीप लाने का अभियान है।

गायत्री परिवार द्वारा कोरोना योद्धाओं के हितार्थ की गई प्रार्थना, सहयोग और सम्मान के वीडियो दिखाए गए, जिन्हें देखकर सभी की आँखें नम हो गईं।

यह कार्यक्रम श्री हितेश जोशी, शुचिता शेट्टी, गायत्री नाइक, श्री जतीन दवे आदि के प्रमुख सहयोग से आयोजित किया गया था।

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा सेवाएँ

बहराइच। उत्तर प्रदेश

8 मार्च को माता भगवती कुञ्ज आश्रम परसेंडी, कैसरगंज में नेत्र सर्जन डॉ. एम. के. गुप्ता के प्रमुख सहयोग से निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें सैकड़ों मरीजों का नेत्र परीक्षण कर निःशुल्क दवाएँ वितरित की गई। बीस मरीजों का चयन नयनजोत आँख अस्पताल कैसरगंज में मोतियाबिंद के निःशुल्क आपरेशन कराने के लिए किया गया। आश्रम व्यवस्थापक श्री लाडली प्रसाद वर्मा ने सभी चिकित्सों व स्वयंसेवकों का अभार व्यक्त किया।

पाप शीघ्र बढ़ता है, परन्तु पानी के बुलबुलों की भाँति नष्ट भी शीघ्र ही हो जाता है। नेकी देर में फैलती है, परन्तु सदा जिंदा रहती है।

प्रगतिशील विचारों वाले समाज के निर्माण के लिए युगऋषि के विचारों का विस्तार

उच्च न्यायालय परिसर में पुस्तक मेला

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरानगर द्वारा प्रथम बार हाईकोर्ट परिसर में दो दिवसीय (8 एवं 9 मार्च) पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। बार एसोसिएशन के अध्यक्ष एच.जी.एस. परिहार, वरिष्ठ अधिवक्ता, महासचिव शरद पाठक ने दीप प्रज्वलन कर मेले का शुभारम्भ किया। उनके अलावा चीफ स्टेण्डिग कांउसिल श्री जे.के. सिन्हा एवं वरिष्ठ अधिवक्ता सहित काफी संख्या में अधिवक्ताओं ने ऋषि साहित्य का अवलोकन किया।

सभागार में युगऋषि द्वारा रचित विपुल साहित्य प्रदर्शित किया गया। उर्दू और अंग्रेजी में भी प्रचुर साहित्य उपलब्ध था। अतिथियों को इसकी जानकारी देने के लिए सर्वश्री प्रभाकर सक्सेना, गिरजा शंकर शर्मा, अरूण श्रीवास्तव, रोहित, जितेन्द्र, निर्मल राणा, अनिल भटनागर, उमानंद शर्मा एवं श्रीमती सावित्री शर्मा आदि ने सेवाएँ दीं।

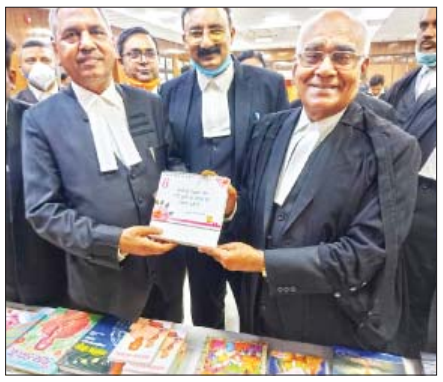

युग साहित्य का अवलोकन करते वरिष्ठ अधिवक्तागण

महिला विचार संगोष्ठी

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में सायंकाल 'राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका' विषय पर विचार गोष्ठी आयोजित की गयी थी। माननीया न्यायमूर्ति श्रीमती संगीता चन्द्रा, माननीया न्यायमूर्ति श्रीमती रेखा दीक्षित, माननीया न्यायमूर्ति श्रीमती सरोज यादव तथा श्रीमती ज्योति सिक्का अपर महाअधिवक्ता उ.प्र. शासन एवं चीफ स्टेण्डिग कांउसिल श्री जे.के. सिन्हा सहित कई अधिवक्ताओं ने इसमें भागीदारी की।

चक्रतीर्थ की 84 कोसीय परिक्रमा

50,000 लोगों में साहित्य वितरित किया

1000 से अधिक ज़रूरतमंद पदयात्रियों को निःशुल्क औषधि दी

नैमिषारण्य, सीतापुर। उत्तर प्रदेश

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट शान्तिकुंज हरिद्वार के स्वामित्व में निमार्णाधीन श्री राम साधना आरण्यक नैमिषारण्य के व्यवस्थापक श्री ललित दीक्षित के नेतृत्व में 24 सदस्यीय टोली ने 84 कोसीय परिक्रमा सम्पन्न की। इसमें उन्होंने 50,000 लोगों को निःशुल्क साहित्य एवं 1000 से अधिक पीड़ित, बीमार पदयात्रियों को निःशुल्क औषधि प्रदान की। 150 से अधिक घरों में गंगाजली-देवस्थापनाएँ करवाईं। मार्ग में जहाँ 9 पड़ावों पर रात्रि विश्राम किया, वहाँ दीपयज्ञ कराए। साधना आरण्यक का ज्ञानरथ भी साथ साथ चलता रहा। इस अभियान में गायत्री परिवार सीतापुर, शाहजहांपुर, हरदोई और लखनऊ के परिजनों ने भागीदारी की।

कार्यशाला

संस्कार परम्परा का पुनःजागरण

डॉ. मंजु शर्मा महापात्र एवं श्रीमती प्रज्ञा मिश्र कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए

सुन्दरगढ़। ओडिशा

16 मार्च को गायत्री शक्तिपीठ सेक्टर-2 में 'संस्कार परंपरा का पुनः जागरण' विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें गायत्री परिवार की ओर से प्रियदर्शनी महिला महाविद्यालय की हिन्दी की व्याख्याता, साहित्यकार डॉ. मंजु शर्मा महापात्र तथा श्रीमती प्रज्ञा मिश्र ने नारी का महत्व, माँ का महत्व और पुंसवन संस्कार के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

बाल विकास परियोजना अधिकारी श्रीमती गीतांजलि नायक इसकी मुख्य अतिथि थीं। उन्होंने बाल विकास परियोजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारियाँ दीं एवं उन्हें क्रियान्वित करने में आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं की भूमिका को सराहा। पर्यवेक्षक श्रीमती अलका दास और आंगनवाड़ी की अनेक कार्यकर्त्ता-सहायिकाएँ भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। गायत्री शक्तिपीठ की ओर से श्री नित्यानंद दास जी ने संस्कार परंपरा की व्याख्या की। विजय कर, राम मोहन साहू, जय प्रकाश जिंदल, चिंतामणि, अनीता जिंदल, पूजा आदि का प्रशंसनीय योगदान रहा।

शक्तिपीठ के स्थापना दिवस पर सेवा भावना का सम्मान

जमशेदपुर। झारखण्ड

गायत्री ज्ञान मंदिर भालू बासा में गायत्री शक्तिपीठ टाटानगर का 40वाँ स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। श्री संतोष महतो ने इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माता जी के टाटानगर आगमन से लेकर गायत्री शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा के हृदयस्पर्शी संस्मरण सुनाए, जिन्हें सुनकर सभी भावविभोर नज़र आए। श्रीमती रेखा शर्मा, श्रीमती शशिप्रभा देवी एवं श्रीमती मंजू देवी ने भावी सक्रियता की मार्मिक प्रेरणाओं के साथ दीपयज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर 21 मार्च 2021 को संपन्न कराए गए 44 वें रक्तदान शिविर शानदार सफलता के प्रति सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए संयोजक श्री संजीव सिन्हा द्वारा उन्हें पुरस्कृत किया गया। परस्पर मंगल तिलक कर होली की शुभकामनाएँ दी गईं।

गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा

कसडोल, बलौदाबाजार। छत्तीसगढ

तहसील कसडोल के ग्राम छेछर में 1 से 3 मार्च की तिथि में नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ की उर्जा से ग्राम सरवा, सरवानी, भदरा, मल्दा, साबर सहित निकटवर्ती 11 गाँवों के परिजनों में उत्साह का संचार हुआ। इन गांवों में 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के अंतर्गत घर-घर गंगाजल एवं देवस्थापना कराये जाने के संकल्प उभरे। यज्ञाचार्यों ने पूज्यवर के साहित्यों के नियमित स्वाध्याय एवं नशा छोडने की प्रेरणाएँ ग्रामवासियों को प्रमुखता से दीं। कार्यक्रम सम्पन्न कराने महासमुन्द से श्री जगदीश साहू की टोली पहुँची थी। सर्वश्री जवाहर लाल कैवर्त्य, सियाराम साहू, प्यारे लाल एवं श्यामलाल वर्मा आदि की सराहनीय भूमिका रही।

राजादेवरी में

इसी प्रकार कसडोल ब्लॉक के राजादेवरी ग्राम में 15 से 19 मार्च की तिथियों में पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञापुराण कथा आयोजन हुआ। यज्ञ एवं प्रज्ञापुराण में निकटवर्ती कई गांवों के परिजनों ने भाग लिया। कई युवाओं ने कथा से प्रेरित होकर दुर्व्यसन छोडने एवं समाज के लिए अपनी प्रतिभा लगाने के संकल्प लिए।

सद्वाक्यों के होर्डिंग्स लगाने का अभियान

नदबई, भरतपुर। राज.

अपने जिले में सजगता, सक्रियता, जनजागरूकता का आदर्श प्रस्तुत कर रही नदबई शाखा ने इन दिनों नगर में सद्वाक्यों के होर्डिंग्स लगाने का अभियान चला रखा है। नगर के रेलवे स्टेशन से लेकर बस स्टैण्ड एवं अन्य सार्वजनिक स्थानों पर बड़े-बड़े होर्डिंग्स उनके द्वारा लगवाये जा रहे हैं। क्षेत्र के प्रमुख प्रेरणा स्त्रोत श्री रवि सिंह इन्दौलिया से लेकर युवा प्रकोष्ठ के श्री महिपाल सिंह, श्री श्याम सिंह, श्री विष्णु शर्मा एवं अन्य सभी

नदबई में रेलवे स्टेशन अधीक्षक श्री संजीव मीणा के संरक्षण में लगाए जा रहे हैं सद्वाक्यों के होर्डिंग

युवा इस अभियान में पूरे जोश और उत्साह के साथ संलग्न हैं। समर्पित कार्यकर्त्ता श्री शिवराम शर्मा (शिक्षक) ने बताया कि यह बड़े-बड़े सद्वाक्य जनजागरूकता अभियान को बल देंगे। यह पूज्य गुरुदेव के आदर्शों का सतत स्मरण कराते रहेंगे।

गायत्री ज्ञान मंदिर का वाङ्मय स्थापना अभियान

सेना के ऑफिसर्स ट्रेनिंग कॉलेज में युगऋषि का वाङ्मय स्थापित

सेना के अधिकारियों को वाङ्मय साहित्य सौंपतीं श्रीमती रेखा सिंह

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर ने ऑफिसर्स ट्रेनिंग कॉलेज, आर्मी कैण्ट, लखनऊ में तथा गाँधी इण्टर कॉलेज बछरावाँ रायबरेली के पुस्तकालयों में युगऋषि पं. श्री राम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित सम्पूर्ण वाङ्मय (79 खण्ड) की स्थापना की। यह साहित्य गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट, गायत्री ज्ञान मंदिर इन्दिरा नगर के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्रीमती रेखा सिंह एवं श्री अजय कुमार सिंह ने भेंट किया है।

गायत्री ज्ञान मंदिर, इन्दिरा नगर का 501 पुस्तकालयों में युगऋषि का वाङ्मय स्थापित करने का लक्ष्य है। अब तक 340 प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में स्थापना हो चुकी है।

गायत्री ज्ञान मंदिर लखनऊ विभिन्न पुस्तकालयों में वाङ्मय स्थापना अभियान के अन्तर्गत अब तक 340 पुस्तकालयों में युगसाहित्य स्थापित कर चुका है। इससे पूर्व सक्रिय कार्यकर्त्ता श्रीमती रीता श्रीवास्तव की ओर से एस.एस.जे.डी. इण्टर कॉलेज फैजुल्लागंज लखनऊ (उ.प्र.) के केन्द्रीय पुस्तकालय में युगऋषि के समग्र वाङ्मय सेट की स्थापना की गई थी।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्रीमती उर्मिला ठाकुर, शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ गौहरपुरा, शाहजहाँपुर की मुख्य प्रबंध ट्रस्टी एवं शाहजहाँपुर में मिशन का आधार स्तंभ मानी जाने वाली श्रीमती उर्मिला ठाकुर का 13 मार्च 2021 को स्वर्गवास हो गया। वे सन् 1979 में मिशन से जुड़ीं, गायत्री शक्तिपीठ गौहरपुरा की स्थापना के क्रम में पूरे जिले में गाँव-गाँव घूमकर कार्यकर्त्ताओं को संगठित किया। गुरुकार्य के लिए वे दिन-रात सक्रिय रहीं और सदा युवाशक्ति को प्रेरित और प्रोत्साहित करती रहीं।

श्री योगेन्द्र प्र. मेहता, बोकारो। झारखड

विगत 35 वर्षों से मिशन की सेवा में संलग्न श्री योगेन्द्र प्रसाद मेहता का 6 मार्च 2021 को देहावसान हो गया। वे 70 वर्ष के थे। इन दिनों बोकारो शाखा का कम्प्यूटर सम्बन्धी कामकाज वे ही सँभाल रहे थे।

श्री रविन्द्र अग्रवाल, हटा। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार के कार्यकर्ता एवं समाजसेवी पत्रकार श्री रविन्द्र अग्रवाल का 61 वर्ष की आयु में 8 फरवरी 2021 को देहावसान हो गया। श्री अग्रवाल जीवन भर मिशन के समाचारों को समाचार पत्रों के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाते रहे हैं। वे 'पेपर वाले बब्बा' के नाम से जाने जाते थे।

श्री भवानीशंकर गुप्ता, खानपुर, झालावाड़। राजस्थान

86 वर्ष की अवस्था में भी 100 से अधिक अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ वितरित करने वाले प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री भवानीशंकर गुप्ता (विजयवर्गीय) का दिनांक 19 फरवरी 2021 को देहावसान हो गया। वे सन् 1960 से मिशन की सेवा में समर्पित हुए, अनेक कार्यकर्त्ताओं को जोड़ा जो इन दिनों झालावाड़ जिले में गायत्री परिवार के हीरे-मोती के रूप में अपनी चमक बिखेर रहे हैं।

श्री रघुवर प्रसाद साहू, छिर्रा, बलौदाबाजार। छत्तीसगढ

प्रज्ञापीठ छिर्रा के मुख्य ट्रस्टी 70 वर्षीय श्री रघुवर प्रसाद साहू का 4 मार्च 2021 को निधन हो गया। वे पिछले 40 वर्षों से मिशन की सेवा में समर्पित थे।

‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ युग चेतना के विस्तार का एक प्रभावशाली अभियान

दक्षिण पश्चिम जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री कृष्ण कुमार महाजन ने ‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ अभियान के प्रशिक्षण के क्रम में गोवा और महाराष्ट्र के 13 जिलों की यात्रा के बाद अपने और अपने जोन के कार्यकर्त्ताओं के अनुभवों को साझा करते हुए कहा –

“नए वर्ग तक पहुँचने का अभूतपूर्व अवसर”

- कोरोना संकट की शिथिलता सक्रियता में बदली।
- अत्यंत प्रतिष्ठित महानुभावों तक पहुँचा मिशन। विलक्षण हैं उनकी अनुभूतियाँ।
- अखण्ड ज्योति आदि पत्रिकाओं के सदस्यता अभियान को गति मिली।
- गोवा में मिशन का क्रान्तिकारी विस्तार हो रहा है।

श्री कृष्ण कुमार महाजन ने कहा कि ‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ अभियान कोरोना काल में कार्यकर्त्ताओं में आई शिथिलता को दूर कर उनमें नए जोश और उत्साह का संचार करने वाला सिद्ध हुआ है। इस अभियान ने नए लोगों तक पहुँचने का अभूतपूर्व अवसर दिया है। समाज के लब्ध प्रतिष्ठित लोगों के घर देवस्थापना का अवसर मिला, शानदार अनुभव हुए।

भुसावल के श्री प्रकाश गुप्ता के अनुभव की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जब प्रतिष्ठित महानुभावों के घर गंगाजल और देवस्थापना करने पहुँचे तो उन्होंने इस अभियान का हृदय से स्वागत किया और सराहा। जब उन्हें मिशन की जानकारी दी गई तो उन्होंने यही कहा, ‘‘आपने अब तक हमें इस मिशन से क्यों नहीं जोड़ा?’’ सभी बड़ी श्रद्धा के साथ अखण्ड ज्योति पत्रिका के सदस्य बनते गए।

पुणे से श्री शिवाजी वाल्के ने बताया कि पुणे के डीआईजी के घर देवस्थापना की। कुछ दिनों के बाद उनका फोन आया। वे कह रहे थे, ‘‘देव स्थापना के बाद उपासना-पूजा में उनकी तन्मयता पहले से बहुत बढ़ गई है। मैं गायत्री मंत्र सुनते-सुनते ऐसे ध्यानस्थ हो जाता हूँ कि मुझे समय का पता ही नहीं चलता। मुझे बहुत शान्ति मिलती है। अपने तनावपूर्ण कार्य में इस प्रकार की मानसिक शान्ति का अनुभव होना बहुत बड़ी बात है।’’

श्री कृष्ण कुमार महाजन बताते हैं कि देवस्थापना के बाद घर-परिवार के बदलते

पुणे के पुलिस उपाधीक्षक श्री शिवाजी राव टाथावाडे के घर देवस्थापना कराते शिवाजी वाल्के

वातावरण को देखकर उनकी मिशन के प्रति आस्था निरन्तर बढ़ रही है। वे अपने घर-परिवार के वातावरण को बेहतर बनाने के लिए उत्साहित हैं।

गोवा से 3500 किटों की माँग आई थी। इस विकासमान क्षेत्र में 3500 देवस्थापना होने के प्रति आशंका थी, लेकिन वहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने अब तक सभी 3500 स्थापनाएँ पूरे विधि-विधान के साथ कर दी हैं। उनमें पणजी, मडगाँव, फोंडा आदि सभी नगरों के नैष्ठिक परिवारों को मिशन से जोड़ने का उत्साह देखा जा रहा है। गोवा के विधानसभा अध्यक्ष, सचिवालय के अधिकारी, मुख्यमंत्री आदि अधिकांश प्रतिष्ठित महानुभावों के घर देवस्थापना की गई।

इस अभियान से मिशन की पत्रिकाओं की संख्या बहुत बढ़ी है। समयदान-अंशदान का क्रम भी अप्रत्याशित रूप से बढ़ रहा है।

प्रतिष्ठित पत्रकार की दृष्टि में

झाँसी। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ आँतिया तालाब झाँसी पर आयोजित समारोह के साथ जिले में घर-घर गंगाजल पहुँचाने के अभियान का शुभारंभ हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि दैनिक जागरण के संपादक श्री सुरेन्द्र सिंह थे। उन्होंने कोरोना विपदा के कारण जनमानस तीर्थ स्थलों पर नहीं जा पा रहा है। ऐसे में गायत्री परिवार का घर-घर गंगाजल पहुँचाने का अभियान अनूठा है।

श्री सुरेन्द्र सिंह ने कहा कि कोई भी कार्य समूह के लिए कठिन नहीं होता है। समाज के हर वर्ग को साथ लेकर कार्य करने वाले शान्तिकुञ्ज का यह अभियान अभिभूत करने वाला है। शान्तिकुञ्ज के टोली नायक श्री नमो नारायण पांडे ने अभियान की आवश्यकता तथा जीवन में गंगा-गायत्री की महत्ता पर प्रकाश डाला।

कुम्भ एवं शान्तिकुञ्ज के प्रतीकों की स्थापना का शुभारम्भ संपादक श्री सुरेन्द्र सिंह एवं उनकी धर्मपत्नी उषा सिंह को भेंट करने के साथ हुआ। दो दिन चले प्रशिक्षण में झाँसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर एवं महोबा के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर उपजोन समन्वयक सतीश चन्द्र मिश्रा सहित संभाग के प्रमुख कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री हरीकृष्ण पुरोहित ने किया।

> “ समाज के हर वर्ग को साथ लेकर कार्य करने वाले शान्तिकुञ्ज का यह अभियान अभिभूत करने वाला है।
>
> **- श्री सुरेन्द्र सिंह, सम्पादक, दैनिक जागरण**

छत्तीसगढ़ के 15000 घरों में कुम्भ एवं देवस्थापना

रायपुर। छत्तीसगढ़

उपजोन रायपुर से सम्बद्ध पाँच जिलों में ‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ अभियान के अन्तर्गत श्रद्धा संवर्धन की सशक्त लहर देखी जा रही है। केन्द्रीय प्रतिनिधि श्री सुखदेव निर्मलकर की मुख्य उपस्थिति में गायत्री शक्तिपीठ समता कॉलोनी में आयोजित कार्यकर्त्ता संगोष्ठी में कार्यकर्त्ताओं की श्रद्धा की भव्य झाँकी दिखाई दी। स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने कहा कि जहाँ यह अभियान लोगों को कुम्भ के अमृत का लाभ लेने का सौभाग्य प्रदान करने आया है, वहीं हमें भी घर-घर तक गंगा को पहुँचाने के महान कार्य में भागीदारी का दिव्य अवसर प्रदान कर रहा है।

रायपुर जिले में ब्लॉक स्तर पर लगभग 1000 से लेकर 2500 तक की संख्या में देव स्थापना कराई जा रही हैं। रायपुर जिले में 15000 घरो में कुम्भ और शान्तिकुञ्ज को पहुँचाने का अभियान चल रहा है। अभनपुर में 2500, आरंग में 2500, तिल्दा में 2500, धरसीवां में 2000, कुशालपुर में 1000, सन्तोषीनगर में 800, खमतराई में 1200, दावड़ा कालोनी में1300, तेलीबांधा में 800, टाटीबंध में1000 तथा समता कॉलोनी, रायपुर में भी लगभग 1000 नए घरों में देव स्थापना कराने के लक्ष्य के साथ हज़ारों की संख्या में कार्यकर्त्ता पूरे जोश और उल्लास के साथ सक्रिय हैं।

गायत्रीमय हो गया है चौमहला नगर

चौमहला, झालावाड़। राजस्थान

आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार अभियान के उत्साहवर्धक वातावरण में गायत्री शक्तिपीठ चौमहला ने फरवरी-मार्च में घर-घर दीपयज्ञों की शृंखला चलाई। इनसे पूरे कस्बे का वातावरण धार्मिक हो गया। अपने घर कुम्भ के प्रतीकों की स्थापना कराने वाले ही नहीं, अन्य श्रद्धालुओं ने भी दीपयज्ञ कराये और सत्संकल्प लिए। इस अभियान की सफलता में परिव्राजक श्री प्रेमनारायण मीणा व रतनलाल सिसोदिया का प्रमुख योगदान रहा, जिन्होंने घर-घर को गायत्रीमय बनाने का संदेश दिया, उत्साह जगाया। इन दो माह में लगभग 131 घरों में देवस्थापनाएँ हुईं।

बूँदी। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ बूँदी के महिला मण्डल ने ‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ अभियान के अन्तर्गत बूँदी शहर ही नहीं, 11 गाँवों के 24-24 घरों में पूरी तन्मयता और तत्परता के साथ पूरा किया। उनके द्वारा गाँववासियों को न केवल देव परिवार निर्माण की प्रेरणा दी गई, बल्कि उनसे गौपालन, सरोवर संरक्षण, हरीतिमा संवर्धन जैसे अत्यावश्यक रचनात्मक कार्यों को चलाने की प्रार्थना भी की।

24 गाँवों के 24-24 घरों को देवपरिवार बनाएँगे

देवस्थापना है आरम्भ, सतत् चलेगा संपर्क अभियान

मोडासा, अरवल्ली। गुजरात

गायत्री चेतना केन्द्र, मोडासा ने ‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ अभियान की सार्थकता को ध्यान में रखते हुए उसके श्रेष्ठतम उपयोग के लिए सक्रियता अपनाई है। केन्द्र ने न केवल देवस्थापना-गंगा अमृत कुम्भ स्थापना का लक्ष्य रखा है, बल्कि अपने से सम्बद्ध सभी 24 गाँवों के 24-24 नए घरों को देव परिवार बनाने तक के लिए योजना बनाई है। केन्द्र द्वारा 5-5 भाई-बहिनों की 12 टोलियों का गठन किया गया है। वे न केवल 24 घरों में देवस्थापना करेंगी, बल्कि आगे भी उन घरों से निरन्तर सम्पर्क बनाए रखकर यज्ञ, संस्कार, स्वाध्याय जैसे क्रम चलाती रहेंगी। देवस्थापना के लिए घरों का चयन भी हर गाँव में दो-तीन बार गोष्ठियाँ लेने के बाद किया जा रहा है।

स्थापना का आकर्षक स्वरूप

हर गांव में कार्यक्रम के पूर्व गोष्ठियाँ होती हैं, जिनमें 24 देवपरिवारों का चयन होता है। देवस्थापना कार्यक्रम के दिन घरों को

देवस्थापना से पूर्व की शोभायात्रा

बंदनवारों से सजाया जाता है। पूरे गाँव में उत्सव जैसा वातावरण होता है। मोडासा की टोली द्वारा लाए गए कुम्भ एवं शान्तिकुञ्ज के प्रतीकों का पूरे विधि-विधान से स्वागत-पूजन होता है। बड़े कलशों में उन्हें स्थापित कर उन्हें मस्तक पर धारण कर बहिनें पूरे गाँव में शोभायात्रा निकालती है। 24 घर ही नहीं, पूरे गाँव के लोग इस कार्यक्रम में भाग लेती है। विधि-विधानपूर्वक घर-घर देवस्थापना कराई जाती है।

गाँव-गाँव देव परिवार निर्माण का अभियान

कलश यात्राएँ एवं समारोहपूर्वक देवस्थापनाएँ

- ग्राम लोहाना, बांगर एवं आवास नगर के 105 घरों में गंगा अमृत कुम्भ एवं देवस्थापनाएँ हुईं।
- प्रतिदिन अलग-अलग गाँव-मोहल्लों में चल रहा है यही क्रम।

देवास। मध्य प्रदेश

देवास शाखा द्वारा आपके द्वार पहुंचा हरिद्वार के तहत एवं ‘हर-हर गङ्गे, घर-घर गङ्गे’ अभियान में निरंतर ग्रामीण क्षेत्रों एवं देवास की कई कॉलोनियों में यह अभियान पूर्ण उत्साह एवं श्रद्धा के साथ चल रहा है। आमजनों में भी इसको लेकर भरपूर उत्साह है। गंगा अमृत कुम्भ की स्थापनाएँ जनमानस में श्रद्धा का संचार करने वाले शानदार कार्यक्रमों के साथ की जा रही है। इसी क्रम में ग्राम बांगर, लोहाना एवं आवास नगर में कलश यात्रा और दीपयज्ञ के आयोजनों के साथ स्थापनाएँ की गयीं।

गायत्री शक्तिपीठ प्रतिनिधि श्री विक्रमसिंह चौधरी ने बताया कि देवास से 15 किलोमीटर दूर ग्राम लोहाना में 36

घरों में, आवास नगर में 45 नए घरों में तथा ग्राम बांगर में 24 घरों में माँ गंगा एवं माँ गायत्री की स्थापना कराई गई। जिला समन्वयक श्री रमेशचन्द्र मोदी, युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री प्रमोद निहाले, हजारीलाल चौहान, शालिग्राम सकलेचा आदि ने कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों में समाज, राष्ट्र, संस्कृति के उत्थान के लिए घर-परिवार के वातावरण को देवोपम बनाने की मार्मिक प्रेरणाएँ दीं।

संभ्रान्त और श्रद्धावान परिवारों में स्थापनाएँ

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश

गायत्री चेतना केन्द्र मुरादाबाद की टोली पूरी निष्ठा और तन्मयता के साथ संभ्रान्त एवं श्रद्धावानों तक ‘आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार’ कार्यक्रम लेकर उन्हें युग निर्माण आन्दोलन के साथ जोड़ने में जुटी है। इस अभियान में महिला मण्डल विशेष रूप से सक्रिय है। घर-घर दीपयज्ञों के माध्यम से लोगों को अखण्ड ज्योति, युगसाहित्य एवं संस्कार परम्परा से जोड़ा जा रहा है।

व्यक्तिगत लाभ के लिए ही नहीं, समाज और राष्ट्र के हित में कोरोना वैक्सीन अवश्य लगवायें। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्डया जी

श्रद्धेय प्रणव जी टीका लगवाते हुए

दिनांक 20 मार्च 2021 को श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जीजी, आदरणीय डॉ. चिन्मय जी, शेफाली जीजी एवं पूरे परिवार ने कोराना वैक्सीन का दूसरा टीका लगवाया। इस अवसर पर समस्त देशवासियों से अपने अनुभव साझा करते हुए श्रद्धेय डॉ. साहब ने कहा कि हर देशवासी को अपने ही नहीं, बल्कि देश एवं समाज में कोरोना का संक्रमण बढ़ने से रोकने के लिए अपनी बारी आने पर यह वैक्सीन अवश्य लगवानी चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रथम टीके के बाद उन्हें कोई अन्य परेशानी नहीं हुई।

श्रद्धेय डॉ. साहब एवं उनके परिवार ने यह वैक्सीन कनखल, हरिद्वार स्थित रामकृष्ण मिशन हास्पिटल में जाकर लगवाई। इस अवसर पर उन्होंने केन्द्र सरकार, स्थानीय प्रशासन एवं इस कार्य में जुटे समस्त चिकित्सक, उनके सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

मातृशक्ति के उत्कर्ष के लिए आयोजित हुए कार्यक्रम

विद्यालयों में चल रही है कन्या-किशोर कौशल अभिवर्धन शिविर शृंखला

भीलवाड़ा। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ महिला मण्डल भीलवाड़ा द्वारा इन दिनों विद्यालयों में कन्या किशोर कौशल शिविरों की शृंखला चलाई जा रही है। 15 फरवरी से लेकर 8 मार्च तक इस शाखा द्वारा भीलवाड़ा के राजकीय बा.मा. विद्यालय गाँधीनगर, रा.बा. मा. विद्यालय बापूनगर, सेठ मुरलीधर मानसिंहका रा.बा. उच्च मा. विद्यालय, महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लेबर कॉलोनी तथा राजकीय उ.मा. विद्यालय सुभाष नगर में कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन शिविर लगाए जा चुके थे। श्रीमती सरोजना व्यास, डॉ. राधेश्याम श्रोत्रिय, श्री सत्यनारायण व्यास, श्रीमती मधु गुप्ता, श्रीमती मृदुला श्रोत्रिय, श्री राजेश समदानी द्वारा विविध विषयों पर उद्‌बोधन दिए गये। बालकों को नैतिक मूल्यों को अपनाने के साथ समाज में छाई नशा, अश्लीलता, आक्रामकता, भौतिकता की विषाक्तता से बचने-बचाने की मार्मिक प्रेरणाएँ इन शिविरों के माध्यम से दी जा रही हैं।

अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस पर गीता के सूत्रों की व्याख्या

श्रीमती उमा कपूर का अभिनन्दन

नोएडा। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

नारी जाग्रति अभियान, वृहत्तर दिल्ली द्वारा 6 मार्च 2021 को गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक विचार गोष्ठी 'जीवन जीने की कला' का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्रीमती उमा कपूर, सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापिका थीं। वे विदेशों में गीता पर शिक्षण करती हैं।

श्रीमती उमा कपूर ने गीता के महत्वपूर्ण श्लोकों की जीवनोपयोगी व्याख्या करते हुए बताया कि गुरु, गायत्री, यज्ञ, गंगा और गीता तन, मन और आत्मा को स्वस्थ करते हैं। डॉ. ममता सक्सैना ने यज्ञ के वैज्ञानिक प्रभाव पर उनके द्वारा की गई शोध के बारे में जानकारी दी। कई बहिनों ने गीत-संगीत के माध्यम से नारी गौरव बढ़ाया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती कांता जड़िया ने किया।

माता भगवती देवी भोजन प्रसाद सेवा की दूसरी वर्षगांठ पर आयोजित हुआ 'नारी गौरव सम्मान समारोह'

लखीमपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ के संयोजन में विश्व महिला दिवस (8 मार्च) की पूर्व संध्या पर दीप महायज्ञ के साथ माता भगवती देवी नारी गौरव सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें प्राथमिक विद्यालय राजापुर की प्रधानाचार्या रितु अवस्थी को मुख्य अतिथि डॉ. इरा श्रीवास्तव द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

माता भगवती देवी भोजन प्रसाद सेवा में सराहनीय सहयोग करने वाली गीता बरनवाल, शिवांगी बरनवाल, पिंकी मौर्या को भी गायत्री मंत्र चादर व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। विदित हो कि माता भगवती देवी महिला मंडल द्वारा दो वर्ष पूर्व विश्व महिला दिवस के अवसर पर ही आत्मवत् सर्वभूतेषु एवं वसुधैव कुटुंबकम की उदात्त भावनाओं के साथ भोजन प्रसाद सेवा आरम्भ की थी, जो आज तक निरन्तर चल रही है।

महिला सशक्तीकरण के लिए कारागार में प्रतियोगिताएँ

मैनपुरी। उत्तर प्रदेश

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में जिला कारागार मैनपुर में रंगोली, म्यूज़िकल चेअर, चित्रकला, मेंहदी, नाट्यमंचन जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इनके माध्यम से बंदियों को अपनी कला और अंतस् की उमंगों के प्रदर्शन का सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि माननीय जिला न्यायाधीश की धर्मपत्नी श्रीमती डॉ. करुणा थीं। जिलाधिकारी की धर्मपत्नी श्रीमती अल्पना सिंह, सीजीएम मा. तरुन्नम खान तथा बाल संरक्षण अधिकारी श्रीमती मिश्रा, जेल अधीक्षक महोदय की धर्मपत्नी श्रीमती प्रीती शर्मा ने भी कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित होकर बंदी बहिनों का उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम में विद्यालय के बच्चों ने आत्मरक्षार्थ ताईक्वाण्डो का प्रदर्शन किया। कारागार में 15 दिवसीय ब्यूटीशियन प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ भी हुआ।

उज्जैन। मध्य प्रदेश

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर हमें आधी जनसंख्या अर्थात् नारी की स्थिति बदलने के प्रयासों को तेज करने के लिए संकल्पित होना चाहिए। इन दिनों हिमालय से भी एकता और समता का वातावरण बनाने के लिए दिव्य प्रवाह भेजा जा रहा है।

यह उद्‌गार श्रीमती उर्मिला जोशी ने गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित महिला सम्मेलन में व्यक्त किए। उल्लेखनीय है कि वे गायत्री परिवार द्वारा नारी जागरण के लिए किए जा रहे प्रयासों से प्रभावित थीं।

सी.एस.पी पल्लवी शुक्ला ने आप बीती सुनाकर महिलाओं को अपने हक के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। सेन्ट्रल जेल अधीक्षिका अलका सोनकर ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर पल्लवी शुक्ला, अलका सोनकर, उर्मिला जोशी, उर्मिला तोमर, श्रीमती आशा सेन, श्रीमती गंगा भावसार, श्रीमती शकुंतला व्यास को उनके द्वारा की गई उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मान किया गया।

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर कोरोनाकाल में 60 दिनों तक 400 व्यक्तियों के लिए भोजन बनाने की महती सेवा में सतत संलग्न प्रमुख 11 बहिनों का अभिनंदन किया गया।

उज्जैन में पुलिस अधीक्षिका का अभिनन्दन करती गायत्री परिवार की बहिनें

गायत्री महामंत्र लेखन साधना का विशिष्ट अभियान

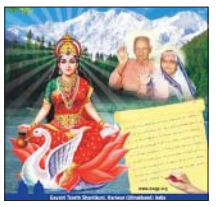

लिखे जा रहे हैं करोड़ों गायत्री महामंत्र

5 अप्रैल से 27 अप्रैल 2021 तक

शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष

चैत्र नवरात्र साधना अनुष्ठान

महाकुम्भ हरिद्वार-2021

5000 से अधिक साधकों की भागीदारी

यह चैत्र नवरात्र साधना (13 अप्रैल से 21 अप्रैल 2021 तक) की वेला है। इसके साथ ही शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष और महाकुम्भ हरिद्वार का दिव्य संयोग भी जुड़ गया है। इसे देखते हुए अखिल विश्व गायत्री परिवार के साधकों में गायत्री मंत्र लेखन साधना का विशिष्ट उत्साह उभरा है। शान्तिकुञ्ज के आह्वान पर 5000 से अधिक साधक इस सामूहिक साधना अभियान में भागीदारी के लिए अपना ऑनलाइन पंजीयन करा चुके हैं। यह संख्या प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। इनके माध्यम से करोड़ों गायत्री महामंत्र लिखे जा रहे हैं।

साधना क्यों?

- साधना जीवन के उत्कर्ष की बुनियाद है। इससे व्यक्तित्व निखरता है।
- साधना से व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण विकसित होता है।
- साधना आत्मिक बल प्रदान करती है, संकल्प दृढ़ होते हैं।
- साधना से स्वभाव, संस्कार और विचारों में सकारात्मक बदलाव आता है।
- साधना से जीवन की कष्ट-कठिनाइयों का निवारण होता है।
- साधना से कषाय-कल्मष दूर होते हैं, पापों का नाश होता है, प्रारब्ध क्षीण होते हैं।
- साधना सूक्ष्म जगत के शोधन एवं वातावरण के परिष्कार के लिए आवश्यक है।

आप भी भाग लें

हम सब जानते हैं कि सामूहिक साधना का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। मंत्र जप साधना का अपना महत्त्व है, लेकिन गायत्री महामंत्र लेखन साधना सरल है। मंत्र लेखन से साधना में एकाग्रता बढ़ती है। शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती और कुम्भ मेला में भागीदारी के संयोग से तो साधना का फल कई गुना अधिक बढ़ जायेगा। अतः गायत्री परिवार के प्रत्येक कार्यकर्त्ता और मानवता का कल्याण चाहने वाले हर श्रद्धालु साधक से निवेदन है कि आत्मकल्याण और लोकमंगल का दोहरा लाभ देने वाले इस विशिष्ट साधना अभियान के साथ अवश्य जुड़ें।

5 अप्रैल से आरंभ

इस सामूहिक साधना का शुभारम्भ तो 5 अप्रैल 2021 से हो रहा है और यह हनुमान जयन्ती-27 अप्रैल 2021 तक चलेगी। अच्छा हो कि साधक-परिजन इस पूरे साधना काल में भाग लें और न्यूनतम 2400 गायत्री मंत्र लेखन अवश्य करें। लेकिन वे साधक भी इसमें भागीदारी कर सकते हैं जो 5 अप्रैल के बाद शामिल होना चाहते हैं या केवल नवरात्र साधना अनुष्ठान करना चाहते हैं। कम से कम 1000 गायत्री महामंत्र लेखन की भागीदारी तो होनी ही चाहिए।

कैसे भाग लें?

अनुष्ठान साधना में दैवी संरक्षण-दोष परिमार्जन के लिए ऑन लाइन पंजीयन अवश्य करवा लीजिए। लॉगऑन कीजिए- https://forms.awgp.org/forms/gayatri_mantra_lekhan

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिए -

09258360600, 08439014110, 09258369734

E-mail- mantralekhan@awgp.org

नोट : 1. मंत्रलेखन के लिए किसी भी रंग की स्याही का प्रयोग किया जा सकता है।

2. मंत्रलेखन अनुष्ठान के पश्चात् पुस्तिकाएँ स्थानीय शक्तिपीठों, प्रज्ञा संस्थानों में जमा की जा सकती हैं अथवा उन्हें प्लेस्टोर में उपलब्ध app (AWGP Parijans) के माध्यम से अपलोड भी किया जा सकता है। लॉगऑन कीजिए- https://play.google.com/store/apps/details?id=in.awgp.apps.awgpparijans

सादगी से, सुरक्षापूर्वक मनाई गई होली

होली का संक्षिप्त समारोह और सद्भाव के प्रतीक यज्ञ भस्म एवं प्राकृतिक गुलाल देते श्रद्धेय डॉक्टर साहब, श्रद्धेया जीजी

''हमारी पर्व परम्परा सामाजिक जीवन में उमंग-उल्लास का संचार करने के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता के लिए भी बनाई गई है। यह होली पर्व कोरोना संक्रमण की विशेष परिस्थितियों में मनाया जा रहा है। हम इसे प्रेम और प्रसन्नतापूर्वक मनाएँ, लेकिन कोरोना संक्रमण से बचाव के नियमों को न भूल जायें।''

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के उपरोक्त संदेश के अनुरूप इस वर्ष होलिका दहन पर्व बिलकुल सादगी और प्रशासन द्वारा बताये गए सभी दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए मनाया गया। होलिका पूजन का संक्षिप्त कर्मकाण्ड हुआ। आश्रमवासियों ने सामाजिक दूरी बनाए रखते हुए होलिका पूजन-परिक्रमा आदि क्रम सम्पन्न किए।

होलिका दहन में अनावश्यक काष्ठ एवं कण्डों की समिधाओं का प्रयोग ही प्रमुख रूप से हुआ। शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ता एवं क्षेत्रीय परिजन ऑनलाइन जुड़े, अपनी श्रद्धा, भावना युगदेवता के श्रीचरणों में समर्पित की और होली की प्रेरणाएँ हृदयंगम कीं।

अगले दिन प्रातः परम पूज्य गुरुदेव, परम वन्दनीया माताजी की चरण पादुकाओं के प्रणाम के साथ-साथ श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने सभी को यज्ञ भस्म एवं गुलाल के पैकेट दिए। हाथ जोड़कर ही परस्पर अभिवादन का क्रम रहा।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने श्रद्धालुओं को अपने वर्चुअल संदेश में होली पर्व का इतिहास और उसका महत्त्व बताया। उन्होंने सुरक्षा एवं सौहार्द्रपूर्वक होली पर्व मनाने की सलाह दी।

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष में घर-घर में होने लगे दैनिक यज्ञ

परिजनों की सुविधा के लिए शान्तिकुञ्ज ने दैनिक यज्ञ किट तैयार की है। जो ऑनलाइन भी उपलब्ध है।

किट में उपलब्ध सामग्री :

• ताम्र हवन कुण्ड- 1 नग, • हवन सामग्री- 250 ग्राम • लोहे की जालियाँ - 2 नग, • बातियाँ- 1 पैकेट, • गाय के गोबर के कण्डे- 30 नग , • अगरबत्ती पैकेट- 1 नग, • देवस्थापना चित्र- 1 नग, • गायत्री यज्ञ एवं उपासना पुस्तक

₹280/-

ऑर्डर के लिए लॉगऑन कीजिए :
https://awgpstore.com/gallery/product/init?id=1698
अधिक संख्या में किट मंगवाने हेतु संपर्क करें - 9258360600

आओ जानें विश्वविद्यालय अपना
(देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-249411)

सप्त क्रान्तियों में से एक स्वावलम्बन की दिशा में स्टार्ट अप्स एवं स्व-उद्यमिता के इस युग में बेरोजगारी की समस्या का समुचित निदान कर युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं ग्राम स्वावलम्बन के लक्ष्य को लेकर लीक से हटकर देव संस्कृति विश्वविद्यालय अनेकों स्वावलम्बन प्रकल्पों के माध्यम से निरन्तर प्रायोगिक एवं प्रभावी कार्य सम्पादित कर रहा है। परिणामस्वरूप अनेकों युवा कौशल अर्जित कर जॉब क्रिएटर बनने में सफल हुए हैं।

- उपरोक्त समस्त कार्य क्षेत्रों सेजुड़े **ऑन कैम्पस** एकेडेमिक कोर्स - बैचलर ऑफ रूरल स्टडीज़ : 03 वर्ष
- इच्छुक परिजनों (उम्र वर्ग 18 से 50, शिक्षा-कक्षा 8 तक की न्यूनतम अर्हता) हेतु प्रत्येक माह 10 दिन से लेकर एक माह तक के शॉर्ट टर्म प्रशिक्षण
- **ऑफ कैम्पस क्षेत्रों में** – गाँवों में शिक्षण वर्कशॉप्स, स्कूल, कॉलेजों में जनजागरूकता कार्यशाला आयोजित कर निरन्तर युवाओं, महिलाओं एवं विद्यार्थियों हेतु प्रशिक्षणका क्रम संचालित किया जा रहा है।

प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण का भी विशेष क्रम। कुटीर उद्योगों की स्थापना हेतु समुचित मार्गदर्शन एवं सहयोग

शिक्षण (Teaching) | परामर्श (Consultation) | प्रशिक्षण (Training) | प्रसार (Extension)

स्वावलम्बन एवं स्व-उद्यमिता केन्द्र (सम्पर्क सूत्र) :
ईमेल : ruralmanagement@dsvv.ac.in मो.नं.: +91-9258369774 @dsvvofficial Dev Sanskriti Vishwavidyalaya
www.dsvv.ac.in

शान्तिकुञ्ज ने आगजनी से पीड़ित 45 परिवारों की सहायता की

हरिद्वार। उत्तराखण्ड

नगर के कनखल के बजरी वाला क्षेत्र में कुछ दिन पूर्व आगजनी की दुर्घटना हुई। इसमें अनेक लोगों की झोपड़ियाँ एवं अन्य सामान जलकर राख हो गया था। पीड़ितों की सेवा-सहयोग की अपनी परम्परा के अनुसार शान्तिकुञ्ज ने इसका संज्ञान लिया और पीड़ित परिवारों के बीच जाकर आवश्यक सहायता प्रदान की।

पीड़ित परिवारों को राहत सामग्री प्रदान करते आपदा प्रबन्धन दल शान्तिकुञ्ज के सदस्य

शान्तिकुञ्ज से श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी के सद्भावपूर्ण संदेश के साथ शान्तिकुञ्ज आपदा प्रबंधन वाहिनी के सदस्य होली से पूर्व दिनांक 26 मार्च के दिन पीड़ितों के बीच पहुँचे। उन्होंने वहाँ लगभग 45 परिवारों में राहत किट वितरित किए। प्रत्येक परिवार को कंबल, तिरपाल, बर्तन, महिला-पुरुष एवं बच्चों के कपड़े तथा कच्चा राशन जिसमें-दाल, चावल, आटा व अन्य सामान आदि शामिल था, प्रदान किए गए। साथ ही सभी पीड़ित परिवारों को भोजन के पैकेट भी दिये गये। शांतिकुंज की राहत टीम में सर्वश्री विष्णु मित्तल, जमुना विश्वकर्मा, मंगलसिंह गढ़वाल, नरेन्द्र ठाकुर, भूषण साहू आदि शामिल रहे।

माता भगवती भोजनालय के लिए अनाज दाताओं का सम्मान

उत्तर प्रदेश के सत्रह जिलों के कार्यकर्ताओं की संगोष्ठी
6000 क्विंटल अनाज दान के संकल्प उभरे

डॉ. चिन्मय जी, डॉ. ओ.पी. शर्मा तथा श्री शिवप्रसाद मिश्रा जी दीप प्रज्वलन करते हुए

21 मार्च को शान्तिकुञ्ज में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 17 जिलों के उन कार्यकर्त्ताओं की विशेष गोष्ठी आयोजित हुई, जो विगत कई वर्षों से अपने क्षेत्र के किसानों से अन्न संग्रह कर शान्तिकुञ्ज भेज रहे हैं। ये कार्यकर्त्ता किसानों को यज्ञभाव के साथ अपनी फसल की प्रथम आहुति शान्तिकुञ्ज के माता भगवती भोजनालय के लिए दान करने की प्रेरणा देते हैं। भेंट-परामर्श के क्रम में श्रद्धेया जीजी से प्रेरणा, मार्गदर्शन, आशीर्वाद मिला। उन्होंने कहा कि जब भगवान के काम के लिए संकल्प लिया जाता है तो उन्हें पूरा करने के लिए भगवान के शक्ति-अनुदान मिलते ही हैं। गोष्ठी में शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती की योजनाओं पर भी विस्तृत चर्चा हुई।

संगोष्ठी का शुभारंभ देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या, श्री शिवप्रसाद मिश्र एवं केन्द्रीय जोन समन्वयक डॉ. ओ.पी. शर्मा द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। डॉ. चिन्मय जी ने शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जीवन का सच्चा आनन्द आत्मिक उन्नति में निहित है। जो भगवान की इच्छा को पूरा करने के लिए तत्पर रहते हैं, उनकी प्रगति, सुख-समृद्धि का ध्यान स्वयं भगवान रखते हैं। पूज्य गुरुदेव युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने आत्मोन्नति के लिए बहुत ही सरल सूत्र बताये हैं, उन्हें व्यवहारिक जीवन में उतारने की आवश्यकता है।

डॉ. ओ.पी. शर्मा ने वर्तमान समय को मानवता के सौभाग्य के उदय का समय बताया। संगोष्ठी में श्री केपी दुबे, श्री श्यामबिहारी दुबे आदि ने भी शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष की विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला। इसका समापन उत्तर जोन प्रभारी श्री नरेन्द्र ठाकुर द्वारा आभार ज्ञापन के साथ हुआ। इस संगोष्ठी में अलीगढ़, बुलन्दशहर, बरेली, मेरठ, मुरादाबाद, बिजनौर, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर सहित पश्चिम उत्तर प्रदेश के सत्रह जिलों के गायत्री परिवार के जोन, उपजोन तथा जिला समन्वयक सहित वरिष्ठ कार्यकर्त्ता भाई-बहिन शामिल रहे।

अनाज दाताओं का सम्मान

गोष्ठी में शान्तिकुञ्ज के लिए अनाज संग्रह कर उसे यहाँ भिजवाने की व्यवस्था करने वाले कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि शान्तिकुञ्ज के भोजनालय के लिए आवश्यक अधिकांश गेहूँ की आपूर्ति पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान के किसानों के अनुदान से होती है। इस वर्ष पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कार्यकर्त्ताओं ने 6000 क्विंटल अनाज शान्तिकुञ्ज भिजवाने का संकल्प लिया है।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल पर भेजें-
email : news@awgp.in

Publication date: 12.4.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23